INTERNATIONAL JOURNAL OF NOVEL RESEARCH AND DEVELOPMENT (IJNRD)
© 2026 IJNRD | Volume 11, Issue 7, July 2026 | ISSN: 2456-4184 | IJNRD.ORG

लोकगीतों एवं लोक नृत्यों में क्षेत्रीय लोक संस्कृति का प्रतिबिम्ब :सिराज एवं सुकेत क्षेत्र के संदर्भ में |

Rohit Kumar[1], Dr. Rajeev Sharma[2]

1 Research Scholar, Department of Music, Himachal Pradesh University, Shimla

Assistant Professor Music Vocal GDC Sujanpur District Hamirpur H.P

2 Assistant Professor, Dept. of Music, Himachal Pradesh University, Shimla

सारांश

किसी भी क्षेत्र विशेष की सांस्कृतिक धरोहर उस समाज में रहने वाले लोगों के जीवन से जुड़े लोकगीत तथा लोकनृत्य होते हैं | संगीत से जुडी ये दोनों विधाएं केवल मात्र आम जन -जीवन की परम्पराओं ,उनकी मान्यताओं तथा भावनाओं की अभिव्यक्ति नहीं होते ,बल्कि इसके साथ -साथ उस समाज की धार्मिक ,सांस्कृतिक ,सामाजिक तथा आर्थिक पृष्ठभूमि का भी आधार होते हैं | इसी प्रकार सिराज एवं सुकेत ये दोनों क्षेत्र अपनी विशेष समृद्ध लोक सांस्कृतिक परम्परा के लिए पुरे हिमाचल प्रदेश में अपना एक अलग स्थान रखते हैं | इन दोनों क्षेत्रों के लोकगीत तथा लोकनृत्य यहाँ के लोक जनजीवन ,कृषि, देव परम्परा, आपसी संबंधों तथा प्राकृतिक संरचना को प्रस्तुत करते हैं | प्रस्तुत शोध पत्र में इन दोनों क्षेत्रों की लोक सांगीतिक परम्परा का विश्लेषण किया गया है,और ये भी पता चलता है कि लोकगीत एवं लोकनृत्य किस तरह से लोक संस्कृति के संरक्षण एवं संवर्धन में अपना महत्वपूर्ण योगदन देते हैं |

मुख्य शब्द :

लोकगीत, लोकनृत्य ,सिराज ,सुकेत ,देव संस्कृति ,नाटी .लोक परम्परा ,हिमाचल प्रदेश |

प्रस्तावना

जैसे -जैसे मानवीय सभ्यता का निरंतर विकास होता गया ठीक उसी प्रकार लोकसंस्कृति ने अपने विकास की गति को आगे बढाया | लोकसंस्कृति एक ऐसा पहलु है जो उस समाज के सामूहिक अनुभव ,आपसी विश्वास ,तथा उनकी मान्यताओं का प्रतिनिधित्व करने का काम करती है | लोकसंस्कृति के अभिन्न अंग माने जाने वाले लोकगीत तथा लोकनृत्य सामाजिक आत्मा को स्वर एवं गतिशीलता प्रदान करते हैं | लोकगीतों तथा लोकनृत्यों की रचना के विषय में कहा जाता है कि इनकी रचना किसी एक व्यक्ति विशेष के द्वारा नहीं की जाती बल्कि इनको बनाने में पुरे समाज का सामूहिक रोल होता है | यही सबसे बड़ा कारण है कि इसी वजह से इन लोकगीतों एवं लोक नृत्यों में सामाजिक जनजीवन की असली झलक दिखाई देती है |

अपनी समृद्ध सांस्कृतिक परम्पराओं के लिए हिमाचल प्रदेश का नाम विश्व पटल पर स्वर्ण अक्षरों में अंकित है | इस सुंदर प्रदेश में हर एक ज़िले की लोकसंस्कृति में अनेक प्रकार की विविधता पाई जाती है लेकिन इसके वावजूद भी इस प्रदेश की लोकसंस्कृति एकता के सूत्र में बंधी हुई है | अगर जिला मंडी के सिराज एवं सुकेत क्षेत्र की बात की जाए तो ये दोनों ही क्षेत्र सांस्कृतिक दृष्टि से अपनी एक अलग ही पहचान बनाए हुए है | इन दोनों क्षेत्रो में प्रचलित लोकगीत एवं लोकनृत्य में सामाजिक जीवन के विविध पक्षों का सुंदर चित्रण प्रतीत होता है | सिराज एवं सुकेत क्षेत्रों के लोकगीतों एवं लोकनृत्यों में प्रेम ,बिछोह ,कृषि ,धार्मिक आस्थाएं तथा आपसी संबंधों का सुंदर समावेश होता है |

सिराज एवं सुकेत क्षेत्रों की देव परम्पराएँ भी क्षेत्र की सांस्कृतिक पहचान करवाने में अपना महत्वपूर्ण योगदान अदा करती हैं | इन क्षेत्रों में देवी -देवताओं को धार्मिक सत्ता तक ही सिमित नहीं रखा जाता बल्कि सामाजिक एवं सांस्कृतिक वयवस्था

को संरक्षित एवं उसका प्रचार प्रसार करने वाला भी माना जाता आया है | यही एक सबसे प्रमुख कारण है कि लोकगीतों एवं लोकनृत्यों पर दैविक संस्कृति ने काफी प्रभाव डाला है | हिमालय की गोद में बसा सुंदर प्रदेश जिसे 'हिमाचल' के नाम से पुरे देश में जाना जाता है ,यहाँ बसने वाले लोगों का जनजीवन अपनी सहजता एवं सरलता तथा अपने धर्म के प्रति अटूट आस्था के लिए प्रसिद्ध है | यहाँ के लोगों का प्रकृति के साथ बड़ा ही गहरा सम्बन्ध रहता है | इसलिए जिला मंडी के अंतर्गत आने वाले दोनों क्षेत्र सिराज एवं सुकेत अति महत्वपूर्ण क्षेत्र हैं | इन दोनों क्षेत्रों की सांस्कृतिक परम्परा आज के समय में भी लोक जीवन में जीवंत दिखाई देती हैं | साल भर होने वाले मेलों ,त्योहारों ,विवाह संस्कारों तथा अन्य खेती बाड़ी के कामों में लोक गीतों तथा लोकनृत्यों का बड़ा अहम रोल होता है | इन दोनों क्षेत्रों के लोकगीतों एवं लोकनृत्यों से हमें केवल मात्र संगीत और नृत्य की जानकारी नहीं होती बल्कि समाज के अनेकों पहलुओं के मूल्य को समझने में भी सहायता मिलती हैं यही सबसे बड़ा कारण होता है कि लोकनृत्य एवं लोकगीत किसी भी क्षेत्र की लोकसंस्कृति का आईना माने गये हैं |

अध्ययन क्षेत्र का परिचय

सिराज क्षेत्र

जिला मंडी का एक ऐसा सुंदर क्षेत्र जहाँ पर प्रकृति ने अपनी विशेष कृपा बरसाई है उस सुंदर क्षेत्र को 'सिराज' के नाम से जाना जाता है अर्थात ऐसा क्षेत्र जो अधिक उंचाई पर स्थित है | प्राकृतिक सुन्दरता से सराबोर यह क्षेत्र पपर्यटन की दृष्टी से भी काफी अग्रणी है | माँ शिकारी देवी ,बड़ा देव विष्णु मतलोडा ,शेटी नाग ,मगरू महादेव इतियादी अनेकों देवी देवताओं की ये पावन भूमि जो 'देवभूमि' के नाम से भी प्रसिद्ध है | अपनी समृद्ध प्राचीन लोक संस्कृति को संजोये यह क्षेत्र सांस्कृतिक चेतना का प्रमुख केन्द्र बना हुआ है | इस क्षेत्र को भौगोलिक दृष्टी से काफी पिछड़ा हुआ माना जाता है | लेकिन इसका सबसे बड़ा फायदा यह हुआ कि इस क्षेत्र की प्राचीन लोकपरम्पराएँ अपने मूल रूप में सुरक्षित रही | सिराज क्षेत्र की देव संस्कृति ,लोकनृत्य ,लोकगीत ,लोकवाद्य तथा विभिन्न उत्सव इस क्षेत्र को सांस्कृतिक पहचान करवाने में महत्वपुर्ण भूमिका निभाते हैं |

सुकेत क्षेत्र

हिमाचल प्रदेश में जब रियासती काल का समय था तो सुकेत रियासत एक ऐतिहासिक रियासत के रूप में मानी जाती थी | सुकेत रियासत के अधीन सुंदरनगर ,निहरी ,पांगना तथा करसोग का क्षेत्र आता था | लेकिन समय के साथ रियासती काल का समय समाप्त हुआ लेकिन इन क्षेत्रों को वर्तमान समय में भी सुकेत क्षेत्र के नाम से जाना जाता है | अपने समृद्ध सांस्कृतिक इतिहास के लिए सुकेत क्षेत्र प्राचीन समय से ही सांस्कृतिक आस्था का प्रतीक रहा है | इस क्षेत्र में बसने वाले लोग अपनी लोककला ,लोकनृत्य तथा अपने लोकसंगीत के लिए काफी ईमानदार और कर्तव्यनिष्ठ रहते हैं इसलिए निरंतर इसके संरक्षण के लिए अपना भरपूर योगदान देते हैं |

अध्ययन के उदेश्य

1 . दोनों क्षेत्रों की लोकसंस्कृति से जुडी विभिन्न परम्पराओं के बारे में अध्ययन |

2 . दोनों क्षेत्रों के लोकगीतों में समाहित धार्मिक ,सांस्कृतिक एवं सामाजिक विषयों का अवलोकन करना |

3 . सिराज एवं सुकेत क्षेत्रों के लोकनृत्यों की सांस्कृतिक विशेषता एवं महत्व के बारे में जानकारी एकत्रित करना |

4 . क्षेत्रीय लोकसंस्कृति के संरक्षण एवं संवर्धन में दोनों क्षेत्रों के लोकगीतों एवं लोकनृत्यों के अहम योगदान का मूल्यांकन |

5 . सिराज एवं सुकेत क्षेत्र की लोकसंस्कृति के सामने उत्पन्न होने वाली मुश्किलें और उसके बचाव के लिए किये जाने वाले उपाय के बारे में जानकारी एकत्रित करना |

शोध पद्धति

प्रस्तुत शोध पत्र मुख्य रूप से गुणात्मक शोध को आधार मानकर तैयार किया गया है | जिसके अंतर्गत सिराज एवं सुकेत क्षेत्रों की लोकसंस्कृति के महत्वपूर्ण अंग माने जाने वाले लोकगीत एवं लोकनृत्य में छिपे हुए विभिन्न पहलुओं को जानने का प्रयास किया गया है | इस शोध के माध्यम से दोनों क्षेत्रों की क्षेत्रीय लोकसंस्कृति के अलग -अलग रूपों को जानना तथा लोककलाओं के द्वारा सांस्कृतिक महत्त्व को समझना शोधार्थी का मुख्य उद्देश्य रहा है |

प्राथमिक तथा द्वितीयक दोनों ही प्रकार के स्रोतों का प्रयोग शोध प्रक्रिया में किया गया है | दोनों क्षेत्रों के लोक कलाकारों , समाज में रहने वाले बुजुर्ग लोगों, देव आस्थाओं से जुड़े लोगों तथा लोक संस्कृति के प्रचार -प्रसार में जुड़े व्यक्तियों से एकत्रित की गई मौखिक जानकारियों को आधार माना गया है | इसके अलावा दोनों क्षेत्रों में लगने वाले मेलों ,वर्ष भर होने वाले पर्वों ,धार्मिक उत्सवों तथा सांस्कृतिक आयोजनों में पेश किये गये लोकगीतों तथा लोकनृत्यों का भी मूल्यांकन किया गया है | जिससे इन क्षेत्रों की लोक परम्पराओं को सही रूप से जानने में आसानी हो सके | द्वितीयक स्रोतों की अगर बात की जाये तो इसके अधीन लोकसाहित्य, लोकसंस्कृति तथा पुरे प्रदेश की लोक सांस्कृति से सम्बन्ध रखने वाली पुस्तकें , शोध प्रबंध ,सरकारी प्रकाशन एवं भाषा कला संस्कृति विभाग से प्रकाशित सामग्री एवं उस जिले का गजेटियर और उपलब्ध डिजिटल स्रोतों की भी सहायता ली गई है |

1 . लोकगीतों में क्षेत्रीय लोकसंस्कृति का प्रतिबिम्ब

1 . 1 . धार्मिक आस्था तथा देव संस्कृति

धार्मिक आस्था के सुन्दर स्वरूप को लिए सिराज एवं सुकेत क्षेत्रों के लोक गीत पुरे प्रदेश भर में लोकप्रिय हैं | यहाँ के लोकगीतों में ज्यादातर देवी -देवताओं का गुणगान ,देवी -देवताओं द्वारा किये गये चमत्कारों का वर्णन तथा उनके द्वारा किये गये लोक कल्याणकारी कामों का बखान मिलता है | देवी -देवताओं के वर्ष भर लगने वाले अनेक मेलों ,देवताओं की शोभायात्राओं तथा समय -समय पर होने वाले धार्मिक कार्यक्रमों के मौके पर गाये जाने वाले गीत लोगों की अगाध श्रद्धा एवं उनके विश्वासों का प्रमाण होते हैं | इन गीतों में क्षेत्र के देवी -देवताओं को वहाँ रहने वाले आम लोगों एवं पुरे समाज की रक्षा करने वाला और मुश्किल घड़ी में सही राह बताने वाला माना जाता है |

1 . 2 . प्रकृति का चित्रण

प्राकृतिक सौंदर्य की अनुपम छठा को खुद में समेटे सिराज एवं सुकेत क्षेत्र पृथ्वी के मानचित्र पर अपनी एक अलग पहचान बनाए हुए हैं | कल- कल करती नदियों तथा आसमान को छूते सुंदर पर्वत तथा वर्ष भर बदलती अनेक प्रकार की ऋतुएं यहाँ के लोक गीतों के माध्यम से हमें सुनने को तथा महसूस करने को मिलती है | देवदार, कायल, बान, महरू इत्यादि अनेक प्रकार के पेड़ पोधों से हरे भरे यहाँ के घने जंगल और इन खूबसूरत घने जंगलों का सुंदर चित्रण हमें यहाँ के लोक गीतों के माध्यम से देखने को सुनने को मिलता है | सिराज एवं सुकेत क्षेत्र दोनों ही ऐसे क्षेत्र हैं जहाँ पर अनेक प्रकार के पर्यटन स्थल हैं जिन पर्यटन स्थलों में यहाँ के देवी देवताओं के सुंदर मंदिर विद्यमान हैं | इन दोनो क्षेत्रों के लोक गीतों में मंदिरों और यहं के खूबसूरत पर्यटन स्थलों इत्यादि का भी वर्णन देखने को मिलता है | सर्दियों के मौसम में जब इन दोनों क्षेत्रों के उंचाई वाले स्थानों पर अत्यधिक बर्फबारी पड़ती है और यह क्षेत्र दुसरे क्षेत्रों से अलग- थलग पड़ जाता है तब यहाँ का प्राकृतिक नजारा और भी ज्यादा सुंदर होता है | बर्फ़ से लदी पहाड़ियों का सुंदर चित्रण भी यहाँ के लोक गीतों में देखने को तथा सुनने को मिलता है |

1 . 3 . सामाजिक संबंधों का चित्रण

सिराज एवं सुकेत क्षेत्र के अधीन आने वाले लोगों के सामाजिक जीवन से जुड़े विभिन्न प्रकार के भावों का चित्रण यहाँ के लोक गीतों में देखने को मिलता है | इन दोनों क्षेत्रों के लोक गीतों में ज्यादातर विषय पति पत्नी का आपसी प्रेम संबंध, माता पिता का प्यार, भाई बहन का प्रेम तथा सगे सम्बन्धियों की मित्रता पर आधारित होता है | इन दोनों क्षेत्रों में जब किसी बेटी की विदाई होती है तो ब्याह से सम्बंधित लोकगीतों का गायन होता है जिससे अत्यंत मार्मिक दृश्य बन जाता है | इन क्षेत्रों में जन्म से लेकर मृत्यु तक के सारे संस्कारों का वर्णन लोकगीतों के माध्यम से प्रदर्शित होता है | वर्ष भर मनाये जाने वाले प्रमुख त्यौहार जिसमें पुरे समाज के रहने वाले लोग इन त्योहारों से सबंधित सभी रस्मों को लोकगीतों के माध्यम से प्रस्तुत करते हैं |

1 . 4 . नारी जीवन का चित्रण

सिराज एवं सुकेत दोनों क्षेत्र ऐसे हैं जहाँ पर ज्यादातर लोगों का व्यवसाय कृषि है इसीलिए इन दोनों क्षेत्रों की महिलायें सुबह से लेकर शाम तक अपने घर के कामों के साथ -साथ खेत- खलिहानों का काम भी बड़ी ही कुशलता के साथ करती हैं | इन क्षेत्रों की महिलाओं की ज़िन्दगी से जुड़े खट्टे मीठे अनुभव ,जीवन में आगे बढ़ते रहने के लिए किये गये संघर्ष ,एक दुसरे से जुडी आशाएं एवं विश्वास इतियादी को लोकगीतों के माध्यम से व्यक्त किया गया है | एक महिला की ज़िन्दगी में होने वाले अनेकों परिवर्तन जैसे उसका बचपन ,शादी के बाद नए घर और नए लोगों के साथ खुद को समायोजित करना ,पिता के घर में बीती अनेक स्मृतियाँ और पारिवारिक माहौल में पड़ने वाली जिम्मेदारियां यहाँ के लोकगीतों में साफ़ -साफ़ दिखाई देती है | एक महिला के जीवन के अनेकों त्योहार जैसे करवाचौथ ,रक्षा बंधन तथा भैया दूज इतियादी का भी अनेकों लोकगीतों के माध्यम से वर्णन मिलता है |

1 . 5 . प्रेम और विरह

हिमाचल प्रदेश में गाये जाने वाले सभी लोकगीतों में ज्यादातर प्रेम और विरह प्रमुख विषय के रूप में रहते है | इसी प्रकार सिराज एवं सुकेत क्षेत्र में जो लोकगीत गाये जाते हैं उनमें आपसी प्रेम भाव और विरह से संबधित गीत सुनने को मिलते हैं | प्रेमी प्रेमिका के मिलन तथा किसी कारणवश हुए विछोह की वेदना ये सभी प्रकार की भावनाएं इन दोनों क्षेत्रों में लोकगीतों के माध्यम से प्रस्तुत की जाती है | सिराज और सुकेत क्षेत्र में अनेक त्यौहार ऐसे हैं जब लोग आपस में मिलजुल कर इन्हें मनाते हैं और आपसी प्रेम प्यार को बढ़ावा देते हैं लेकिन कई बार जब इन क्षेत्रों में कोई अप्रिय घटना घट जाती है तो पुरे क्षेत्र में दुःख की चादर बिछ जाती है | इसलिए इन सभी प्रकार की मिली जुली संवेदनाओं को यहाँ के लोग लोकगीतों के माध्यम से प्रकट करते हैं चाहे वो ख़ुशी से जुडी बात हो या दुख से सम्बंधित घटना हो |

1 . 6 . कृषि जीवन का चित्रण

भौगोलिक दृष्टी से सिराज और सुकेत क्षेत्र ऐसे है जहाँ पर अर्थवयवस्था को सुचारू रूप से चलाए रखने के लिए कृषि आय का मुख्य साधन है | इन दोनों क्षेत्रों के उंचाई वाले स्थानों पर सेब ,नाशपाती,पलम इतियादी के बड़े -बड़े बगीचे हैं और इसके साथ -साथ अनेक प्रकार की दूसरी फसलों को भी बीजा जाता है जैसे मटर ,आलू, लहुसन इतियादी | इन सभी फसलों की बिजाई ,निडाई,कटाई इतियादी करते समय लोग काम करने के साथ -साथ अपने काम से सम्बंधित बातों को लोकगीतों के माध्यम से प्रस्तुत करते हैं | दोनों क्षेत्रों में ये प्रचलन है कि गाँव में किसी का खेती बाड़ी से सम्बंधित कोई भी काम होता है तो इसमें पुरे गाँव के सभी लोग सहायता करते हैं जिससे आपसी भाईचारे को भी निरंतर बढ़ावा मिलता जा रहा है |

2 . लोकनृत्यों में क्षेत्रीय लोक संस्कृति का प्रतिबिम्ब

लोकनृत्य एक ऐसा माध्यम है जिसके द्वारा हमें उस क्षेत्र की सांस्कृतिक पृष्ठभूमि ,सामाजिक जीवन शैली तथा उस क्षेत्र की लोक संस्कृति के दर्शन होते है | लोकनृत्य केवल मात्र मनोरंजन तक ही सिमित नहीं होते बल्कि यह सामाजिक ,धार्मिक आस्थाओं तथा लोकविश्वासों के भी प्रमुख संवाहक के रूप में कार्य करते हैं | सिराज एवं सुकेत क्षेत्रों के लोकनृत्यों में ज्यादातर यहाँ की लोक जीवन शैली ,मानव का प्रकृति के प्रति प्रेम भाव ,एक किसान की खेती बाड़ी से जुडी बातें तथा देवी देवताओं के प्रति आस्था और श्रद्धा का भाव इत्यादि समाहित होता है | प्राचीन समय से ही सिराज एवं सुकेत क्षेत्रों में पारम्परिक लोकनृत्यों का चलन निरंतर चला आ रहा है जो वर्तमान समय में भी उसी रूप में प्रचलित है | वर्तमान समय में इन दोनों क्षेत्रों के सभी प्रकार के सामाजिक एवं धार्मिक आयोजनों में लोक नृत्यों के अनेकों रूपों के प्रत्यक्ष दर्शन देखने को मिलते हैं | इन सभी प्रकार के आयोजनों में सामूहिक नृत्यों के दौरान किसी भी प्रकार की जाति ,धर्म तथा आयु का कोई बंधन नहीं रहता है | समाज में रहने वाले सभी वर्गों के लोग लोकनृत्यों के द्वारा अपनी प्राचीन लोकसंस्कृति को एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक पहुँचाने का काम बड़ी ही ईमानदारी से कर रहे हैं |

2 .1 नाटी : क्षेत्रीय सांस्कृतिक पहचान की प्रतीक

हिमाचल प्रदेश के लोकसंगीत की जब भी कहीं बात होती है तो सबसे पहले लोकनृत्यों में ‘नाटी’ का नाम आता है | ‘नाटी’ इस सुंदर प्रदेश में किया जाने वाला सबसे लोकप्रिय लोकनृत्य माना जाता है | सिराज एवं सुकेत दो ऐसे क्षेत्र हैं जहाँ के लगभग 80 प्रतिशत भाग में ‘नाटी’ की जाती है | इसीलिए अगर हम ‘नाटी’ को इन दोनों क्षेत्रों की सांस्कृतिक पहचान का प्रतीक कहें तो कोई गलत बात नहीं होगी | इन दोनों क्षेत्रों में नाटी नृत्य को सभी लोग सामूहिक रूप से प्रस्तुत करते है जिसमें लयात्मकता तथा अनुशासन का सुंदर मिश्रण होता है | नाटी नृत्य में स्त्री व् पुरुष दोनों मिलकर भाग लेते है तथा एक दुसरे के हाथ से हाथ मिलाकर वृताकार रूप में इस नृत्य को करते है जो देखने में बहुत सुंदर लगता है | नाटी नृत्य में किसी एक कलाकार को ही महत्व नहीं दिया जाता बल्कि इसमें सामूहिक रूप से सभी की सहभागिता बनी रहती है | इसी कारण की वजह से नाटी इन दोनों क्षेत्रों में चलने वाला सर्वाधिक लोकप्रिय लोकनृत्य हैं |

2.2 सिराजी नाटी की विशेषताएं

सिराज क्षेत्र में अनेक पर्व एवं त्यौहार समय -समय पर मनाये जाते हैं | इन सभी त्योहारों में सभी लोग एक स्थान पर एकत्रित होकर लोक संगीत की अनेक विधाओं को प्रस्तुत करते है , जिनमे सिराजी नाटी प्रमुख है | यह सिराजी नाटी अपनी समृद्ध सांस्कृतिक गहराई तथा अपनी विशेष शैली के लिए प्रसिद्ध है | इस सिराजी नाटी की प्रस्तुति में अक्सर धार्मिक भावना एवं देव संस्कृति की झलक दिखाई देती है | इस नाटी में हमेशा श्रधा एवं सामूहिक एकता का अनुपम रूप देखने को मिलता है | सिराज क्षेत्र में प्रयोग की जाने वाली नाटीयों में लय हमेशा धीमी और गंभीर रहती है | इस नाटी में नाचने वाले सभी लोगों की सिमित तथा अनुशासित चाल ही इसकी सुन्दरता को चार चाँद लगा देती है | सभी लोगों द्वारा किया गया मिलाजुला गायन एवं लोकवाद्यों पर बजने वाली मधुर धुनें इसमें चार -चाँद लगा देती हैं |

2 .3 सुकेती नाटी की विशेषताएं

पुरे प्रदेश में सुकेत एक ऐसा क्षेत्र है जहाँ का लोक संगीत अपनी एक विशेष जगह बनाए हुए है | इस क्षेत्र के लोकगीत जितने ज्यादा लोकप्रिय हैं उतनी ही लोकप्रिय यहाँ की 'सुकेती नाटी' है | सुकेती नाटी में उल्लास और सामाजिक सहभागिता की झलक साफ़ -साफ़ दिखाई देती है | यहाँ की नाटी में अक्सर जीवन के प्रति हमारा सकारात्मक दृष्टीकोण ,एक दुसरे के साथ आपसी प्रेम सबंध तथा उत्साह इत्यादि से सम्बंधित विषय उजागर होते हैं | सुकेत क्षेत्र में होने वाले सभी प्रकार के समारोह ,उत्सवों ,मेलों तथा सामाजिक एवं धार्मिक कार्यक्रमों में सुकेती नाटी का सुंदर नृत्य देखने को मिलता है | इस नृत्य में पुरुष एवं महिलायें संयुक्त रूप में मिलकर नृत्य करते हैं |

2 .4 देव नृत्य परम्परा

हिमाचल में सैकड़ों देवी -देवताओं के मंदिर होने के कारण इस प्रदेश को 'देवभूमि' के नाम से भी जाना जाता है | इसी प्रकार सिराज एवं सुकेत दोनों ऐसे क्षेत्र है जहाँ पर अनेकों देवी -देवताओं के मंदिर विद्यमान हैं | इन दोनों क्षेत्रों की लोकसंस्कृति का अभिन्न अंग यहाँ के स्थानीय देवी -देवताओं द्वारा किया गया 'देवनृत्य' है | इन दोनों क्षेत्रों में अनेक अवसरों पर होने वाले धार्मिक अनुष्ठानों ,देवयात्राओं, मेलों इतियादी के समय किया जाने वाला देव नृत्य यहाँ के लोगों के मन में धार्मिक आस्था तथा सामजिक एकता का संचार करता है | देवी देवताओं द्वारा किया गया देव नृत्य केवल मात्र मनोरंजन तक ही सिमित नहीं होता बल्कि यह समाज में रहने वाले लोगों के अंदर नया उत्साह तथा नयी उम्मीद की किरण पैदा करता है | देव नृत्य को देखकर आम जन मानस में नई उर्जा का संचार होता है | देव नृत्य पुरे समाज को एकता के सूत्र में पिरोये रखता है | ये नजारा उस समय ज्यादा मनमोहक प्रतीत होता है जब किसी आयोजन में बहुत सारे देवी -देवता एक साथ मिलकर देव नृत्य करते हैं |

2 .5 मेलों एवं उत्सवों में लोकनृत्यों की भूमिका

सिराज एवं सुकेत क्षेत्रों में वर्ष भर अनेक स्थानों पर अलग देवी-देवताओं के नाम पर मेलों का आयोजन किया जाता है जो यहाँ के लोगों के लिए आकर्षण का केन्द्र बन जाते हैं | यहाँ के प्रमुख मेलों में निम्नलिखित मेले आते है जैसे कुथाह मेला , छतरी मेला ,सुमली मेला ,चपलांदी मेला ,शेटाधार मेला ,करसोग नल वाड़ मेला ,माहूंनाग मेला , सुकेत मेला सुन्दर नगर तथा निहरी मेला इत्यादि | इन सभी मेलों में नृत्य से सम्बंधित अनेक प्रकार की सांस्कृतिक गतिविधियाँ होती हैं जिसमें सभी लोग बढ़चढ़ कर भाग लेते हैं | लोकनृत्यों में ढीली नाटी ,मुन्जरा नाटी ,ताऊली नाटी तथा फैटी नाटी आदि का सुंदर नृत्य लोगों के द्वारा प्रदर्शित किया जाता है | यहाँ के मेलों में होने वाली नृत्य से जुडी ये सभी चीजें सांस्कृतिक आदान-प्रदान तथा सामाजिक एकता को बढ़ावा देती हैं | मेलों के अलावा सिराज एवं सुकेत क्षेत्रों में शिवरात्रि ,दीपावली ,लोहड़ी तथा बैसाखी का पर्व बड़ी ही ही धूमधाम से मनाया जाता है | शिवरात्रि के पर्व के दौरान सिराज क्षेत्रों के पर्वतीय इलाकों में लगभग एक महीने पहले से ही इस पर्व की धूम रहती है | इस दौरान यहाँ के हर घर में अच्छे -अच्छे पकवान बनाए जाते है और गाँव -गाँव में लोगों की मिलीजुली टोलियाँ घर -घर जाकर रात -रात भर नृत्य करती है | दूसरी तरफ सुकेत में बैसाखी तथा लोहड़ी पर्व की धूम रहती है इस दौरान भी इस पुरे क्षेत्र में लोग रात -रात भर मिलजुलकर नृत्य करते है | अत : यह कहा जा सकता है कि प्राचीन काल से चली आ रही समृद्ध परम्परा को ये दोनों क्षेत्र आज भी शुद्ध रूप में संजोये हुए हैं | कुछ स्थानों पर ऐसे पर्वों में भगवान शिव,श्री कृष्ण ,भगवान राम चन्द्र तथा नव दुर्गा के सभी रूपों की झांकियां निकाल कर नृत्य करते है जिसे हमारी धार्मिक आस्था और भी मजबूत बन जाती है |

2 .6 लोक नृत्यों में पारम्परिक वेशभूषा

किसी भी क्षेत्र की संस्कृति को हम उस समय और भी अच्छे से समझ पाते हैं जब हम उस क्षेत्र के लोगों को उनकी पारम्परिक वेशभूषा में देखते हैं | सिराज एवं सुकेत क्षेत्रों की महिलायें जब अपनी पारम्परिक रंग-बिरंगी पोशाकों तथा आभूषणों को पहनकर एकजुट होकर सामूहिक रूप में नृत्य करती हैं तो ये नज़ारा हरेक देखने वाले के मन को छु लेता है | इनके पहनावे में सिर से लेकर पाँव तक सादगी और अपनी समृद्ध लोक संस्कृति की झलक स्पष्ट रूप से झलकती है | इन दोनों क्षेत्रों के पुरुषों के पहनावे में चूड़ीदार पायजामा ,लम्बा कुर्ता ,सदरी तथा सिर के उपर टोपी यहाँ की समृद्ध लोक संस्कृति को दर्शाती है | इन दोनों क्षेत्रों की पारंपरिक वेशभूषा केवल मात्र सुन्दरता के लिए नहीं है बल्कि क्षेत्र की सांस्कृतिक ,सामाजिक तथा ऐतिहासिक परम्परा को भी सुदृढ़ करने में अहम भूमिका निभाती है | इन पारंपरिक परिधानों में जब इन दोनों क्षेत्रों के पुरुष एवं महिलायें अलग -अलग प्रकार के नृत्य करते है तो यह सभी के मन को मोह लेने वाला नज़ारा बन जाता है |

संरक्षण एवं संवर्धन के उपाय

किसी भी क्षेत्र की लोकसंस्कृति के संरक्षण के लिए विभिन्न -विभिन्न प्रकार के कदम उठाये जा सकते हैं :

1 . सिराज एवं सुकेत क्षेत्रों के अंतर्गत आने वाले सभी प्रकार के लोकगीतों तथा लोकनृत्यों का संग्रहण करके उसका दस्तावेजीकरण करना |

2. इन दोनों क्षेत्रों के ऐसे कलाकार जिनका लोकगीतों एवं लोकनृत्यों के प्रचार प्रसार में काफी अहम योगदान रहा है उन सभी कलाकारों जीवन परिचय एकत्रित करके अभिलेखिकृत करना |

3. इन दोनों क्षेत्रों के अंतर्गत आने वाले सभी विद्यालयों एवं महाविद्यालयों में लोक संस्कृति बिषय से सम्बंधित पाठ्यक्रम जारी करना |

4. दोनों क्षेत्रों में ऐसी कार्यशालाएं करवाई जाए जिसमें सभी प्रकार लोक गीतों ,लोकनृत्यों तथा लोकवाद्यों का प्रशिक्षण दिया जा सकें |

5. डिजिटल माध्यमो के द्वारा लोकसंगीत से सम्बंधित सामग्री मुहैया करवाना|

6 . दोनों क्षेत्रों के लोककलाकारों को सही मानदेय के साथ सम्मानित करना |

7 . दोनों क्षेत्रों में लगने वाले मेलों एवं त्योहारों में लोक परम्पराओं को महत्व देना |

निष्कर्ष

लोकगीत एवं लोकनृत्य दोनों ही शैलियों को अगर सिराज एवं सुकेत क्षेत्रों की लोकसंस्कृति का दर्पण कहा जाए तो कोई अतिश्योक्ति नहीं होगी | क्यूंकि इसमें धार्मिक आस्था ,आपसी सामाजिक जुड़ाव ,प्रकृति के प्रति प्रेम ,नारी का सम्मान ,कृषि से जुड़ा जीवन तथा सांस्कृतिक एवं सामूहिक परस्पर एकता का सुंदर चित्रण है | सिराज एवं सुकेत क्षेत्रों के लोकगीत आम जनजीवन की मनोभावना को दर्शातें हैं और इन दोनों क्षेत्रों के लोकनृत्यों में समाज की एकता तथा सांस्कृतिक चेतना छिपी हुई होती है | आधुनिकता के दौर में भी लोकगीतों एवं लोकनृत्यों का प्रभाव लगातार बढ़ता चला जा रहा है | लेकिन फिर भी ये बात बहुत आवयश्क है कि इनके सरक्षण तथा संवर्धन के लिए योजनाबद्ध तरीके से जरूरी कदम उठाये जांए |

संधर्भ ग्रन्थ सूची

1 . ठाकुर ,बी .आर .हिमाचली लोकगीत एवं लोकनृत्य शिमला भाषा एवं संस्कृति विभाग ,हिमाचल प्रदेश, 2008

2 . शर्मा ,हरिकृष्ण ,हिमाचल की लोक संस्कृति नई दिल्ली हिंदी पुस्तक भण्डार ,2005

3 .परमार ,योगेन्द्र सिंह ,हिमाचल प्रदेश का सांस्कृतिक इतिहास शिमला हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय प्रकाशन 1998

4 . ठाकुर ,लेखराज ,हिमाचल प्रदेश के लोकगीत :एक सांस्कृतिक अध्ययन शिमला हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय

5 . हिमाचल प्रदेश भाषा ,कला एवं संस्कृति अकादमी ,हिमाचल प्रदेश की लोकसंस्कृति शिमला: आकादमी प्रकाशन ,2016

6 . भाषा एवं संस्कृति विभाग ,हिमाचल प्रदेश ,हिमाचल के मेले एवं उत्सव शिमला विभागीय प्रकाशन, 2018

Copyright & License:

© Authors retain the copyright of this article. This work is published under the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY 4.0), permitting unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited.